यह प्रश्न-पत्र एवं उत्तर पुस्तिका संयुक्त है।

जय गुरु नाना | जय महावीर | जय गुरु राम

श्री साधुमार्गी जैन धार्मिक परीक्षा बोर्ड, बीकानेर

जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा-2018

समय : 3 घण्टे
12:30 से 3:30 बजे तक

प्रश्न-उत्तर पत्र भाग - 12 आगम

नाम..... पिता/पति का नाम.....

शहर का नाम..... जन्मतिथि..... मोबाइल..... रोल नं .....

नोटः-सभी प्रश्नों के उत्तर, दिये गये निर्देशों के अनुसार, निर्धारित स्थान पर, इसी प्रश्न पत्र में लिखें। उत्तर पुस्तिका जाँचने पर यदि यह पुष्टि होती है कि परीक्षार्थी ने दूसरे का सहयोग लिया है अथवा एकाधिक पुस्तिकाओं के उत्तर समान है तो उसे नकल किया हुआ मानकर परिणाम निरस्त कर दिया जावेगा। केन्द्र अधीक्षक उपरोक्त प्रश्नोत्तर पुस्तिका परीक्षा समाप्ति के अगले दिन श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड़, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) के पते पर भिजवावें।

i.kkd%& 100

प्रश्न 1. निम्न प्रश्नों का उत्तर दीजिए- **40**

1. अद्धाणं जो महन्त तु सपाहेओ पवज्जई। गच्छन्तो सो सुही होइ छुद्य-तण्हाविवज्जिओ।

.....

.....

2. वालुयाकवले चेव निरस्साए उ संजमे। असिधारागमणं चेव दुक्करं चरिउ तवो।

.....

.....

3. काउस्सग्गेणं भन्ते। जीवे किं जणचइ। काउस्सगेणंऽतीय- पडुप्पन्नं पायच्छितं विंसोहेइ।

विसुद्धपायच्छित्ते य जीवे निव्वुयहियए ओहरियभारो व्व भारवहे, पसत्थज्झाणोवगए सुहंसुहेणं विहरइ।

.....

.....

.....

4. गारवेसु कसाएसु दण्ड-सल्ल-भएसु य। नियत्तो हास-सोगाओ अनियाणो अबन्धणो।

.....

.....

5. वन्दएणं नीयागोयं कम्भं खवेइ, उच्चागोयं कम्भं निबन्धइ।

सोहग्गं च णं अप्पडिहयं आणाफलं निव्वत्तेइ, दाहिणभावं च णं जणयइ।

.....

.....

6. उवहि पच्चक्खाणेणं अपलिमन्थं जणयइ। निरूवहिए णं जीवे निक्कंखे, उवंहिमन्तरेण य न संकिलिस्सइ।

.....

.....

7. खमावणयाए णं पल्हायणभावं जणयइ। पल्हायणभावमुणगए य सव्वपाण-भूय-जीवसत्तेसु मित्तीभावमुप्पाएइ। मित्तीभावमुवगए यावि जीवे भावविसोहिं काऊण निब्भए भवइ।

.....

.....

.....

.....

8. सुयाणि में पंचमहत्वयाणि नरएसु दुक्खं च तिरिक्खजोणिसु,

निव्विण्णकामो मि महण्णओ अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो।

.....

.....

.....

9. सव्वभवेसु अस्साया वेयणा वेइया मए। निमेसन्तरमित्तं पि जं साया नत्थि वेयणा।

.....

.....

10. सरीर-पच्चक्खाणेणं सिद्धाइसयगुणत्तणं निव्वत्तेइ। सिद्धाइसय-

गुणसंपन्ने य णं जीवे लोगग्गमुवगए परमसुही भवइ।

.....

.....

.....

11. आद्यं सरंम्भसमारम्भारम्भयोगकृतकारितानुमतकषायविशेषेस्त्रि- स्त्रिस्त्रिश्चतुश्चैकशः।

.....

.....

12. परात्मनिन्दाप्रशंसे सदसद्गुणाच्छादनोदभावने च नीचैगोत्रस्त्र।

.....

.....

13. अणिस्सिओ इहं लोए परलोए अणिस्सिओ। वासीचन्दणकप्पो य असणे अणेसणे।

.....

.....

14. पूर्वप्रयोगादसंगत्वाद्बन्धच्छेदात्तथागतिपरिणामाच्च तद्गतिः।

.....

.....

15. सम्यग्दृष्टि श्रावकविरतानन्तवियोजकदर्शनमोहक्षपकोपशमकोप

शान्तमोहक्षपकक्षीणमोहजिनाः क्रमशोऽसंख्येयगुणानिर्जराः।

.....

.....

.....

16. गलेहिं मगरजालेहिं मच्छो वा अवसो अहं। उल्लिओ फालिओ गहिओ मारिओ य अणन्तसो।

.....

.....

17. जावज्जीवमविस्सामो गुणाणं तु महाभरो। गुरुओ लोहभारो व्व जो पुत्ता होई दुव्वहो।

.....

.....

18. मद्दवचाए णं अणुस्सियत्तं जणयइ। अणुस्सियत्ते णं जीवेमिउमद्धवसंपन्ने अट्ठमयट्ठाणाइं निट्ठावेइ।

.....

.....

19. इमं सरीरं अणिच्चं असुइं असुइसंभव। असासयावासमिणं दुक्ख केसाण भायणं।

.....

.....

20. अप्पसत्थेहिं दारेहिं सव्वओ पिहियासवे। अज्झप्पज्झाणजोगेहिं पसत्थ-दमसासणे।

.....

.....

प्रश्न–2 नीचे दिए गए भावार्थ का मूल पाठ लिखिए– **20**

1. अलोचना, प्रतिक्रमण, तदुभय, विवेक, व्युत्सर्ग, तप, छेद, परिहार और उपस्थापन–यह नौ प्रकार का प्रायश्चित्त है।

.....

.....

2. कर्म(प्रकृत्ति) के कारणभूत सूक्ष्म, एक क्षेत्र को अवगाहन करके रहे हुए तथा अनन्तानन्त प्रदेश वाले पुद्गल योग विशेष से सभी ओर से सभी आत्मप्रदेशों में बन्ध को प्राप्त होते है।

.....

.....

3. व्यवदान से जीव अक्रिया को प्राप्त करता है। अक्रियतासम्पन्न होने के पश्चात् जीव सिद्ध होता है बुद्ध होता है, मुक्त हो जाता है, परिनिर्वाण को प्राप्त होता है और समस्त दुःखों का अन्त करता है।

.....

.....

4. जिस प्रकार सूत्र (धागे) सहित सूई कहीं गिर जाने पर भी विनष्ट नहीं होती (खोती नहीं) उसी प्रकार ससूत्र (शास्त्रज्ञान सहित) जीव संसार में भी विनिष्ट नहीं होता।

.....

.....

5. धर्म मार्ग से च्युत न होने और कर्मों की निर्जरा– क्षय के लिए जो सहन करने योग्य कष्ट सहे जायँ, वे परीषह है।

.....

.....

6. जीविताशंसा, मारणाशंसा, मित्रानुराग, सुखानुबन्ध और निदानकरण मारणान्तिक संलेखना के ये पांच अतिचार है।

.....

.....

7.शरीर के प्रत्याख्यान से जीव सिद्धों के अतिशय गुणों का सम्पादन कर लेता है। सिद्धों के अतिशय गुणों से सम्पन्न जीव लोक के अग्रभाग में पहुंच कर परमसुखी हो जाता है।

.....

.....

8. जब तक वह सयोगि रहता है तब तक ऐर्यापथिक कर्म बांधता है। वह बंध भी सुखस्पर्शी (सातावेदनीय रूप पुण्य कर्म) है। उसकी स्थिति दो समय की है। प्रथम समय में बंध होता है, द्वितीय समय में वेदन होता है

और तृतीय समय में निर्जरा होती है।

.....

.....

.....

9. केवलज्ञानी श्रुत, संघ, धर्म और देव का अवर्णवाद दर्शनमोहनीय कर्म का बंध हेतु है।

.....

.....

10. धर्मश्रद्धा से (जीव) सातावेदनीय कर्म जनित वैषयिक सुखों की आसक्ति से विरक्त हो जाता है, आगार का त्याग करता है। अनगार होकर जीव छेदन- भेदन आदि शारीरिक तथा संयोग आदि मानसिक दुःखो का विच्छेद कर डालता है और अव्याबाध सुख को प्राप्त करता है।

.....

.....

.....

प्रश्न-3 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए- **10**

1. सोहीए य णं विसुद्धाए .....पुणो भवग्गहणं नाइक्कमइ।
2. .....णं जीवे सव्वभावाहिगमं जणयइ।
3. .....क्षमामर्दवार्जवशौचसत्यसंयमतपस्त्यागाकिञ्चन्य बह्मचर्याणिः धर्मः।
4. अप्पडिब्द्धयाए णं.....जणयइ।
5. अकिंचणे य जीवे.....परिसाणं अपत्थणिज्जो भवइ।,
6. तं बद्धं पुट्ठं, ...वेइयं, निज्जिण्णं सेयाले अ अकम्मं चावि भवइ।
7. अल्पारभ्भपरिग्रहत्वं, स्वभावमार्दवार्जवं च.....।
8. आर्तममनोज्ञानां.....तद्विप्रयोगायस्मृतिसमन्वाहारः।
9. .....जणइत्ता सम्मत्तं विसोहेइ।
10. मिथ्यादर्शनाविरतिप्रमादकषाय योगा.....।

प्रश्न-4 गाथा में दिए गलत शब्दों को रेखाकिंत करके पहले कोष्ठक में लिखें। दूसरे कोष्ठक में सही शब्द लिखें। **10**

1. सकषायत्वाज्जीवः अकर्मणो योग्यान् पुद्गलानादत्ते। ( ) ( )
2. गरहणयाए णं पच्छाणुतावं जणयइ। ( ) ( )

3. जिब्भिन्दियनिग्गहेणं अमणुन्नमणुन्नेसु रसेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ।

( ) ( )

4. दर्शन मोहे नाग्यारतिस्यीनिषद्धाक्रोशयाचनासत्कारपुरस्काराः ( ) ( )

5. विसंवायणसंपन्नाएं णं जीवे धम्मस्स आराहए भवइ। ( ) ( )

6. संवरेणं वइगुत्ते पुणो पावासवनिराहं करेह। ( ) ( )

7. प्रमतयोगात् प्राणव्यपरोपणं अहिंसा। ( ) ( )

8. धम्मकहाए आराहणयाए णं अन्नाणं खवेइ। ( ) ( )

9. निस्संगतेण जीवे एगे अणुकम्पए दिआ य राओ य असज्जमाणे अपडिबद्धे यावि विहरह।

( ) ( )

10. कालपडिलेहणयाए नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ। ( ) ( )

प्रश्न-5 निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए- **20**

1. बलश्री युवराज का नाम मृगापुत्र क्यों प्रसिद्ध था ?

.....

2. मृगापुत्र को जातिस्मरण ज्ञान किसे देखकर उत्पन्न हुआ था ?

.....

3. साधुचर्या की तुलना किससे की गयी है ?

.....

4. महानाग जिस प्रकार केंचुली का त्याग कर देता है उसी प्रकार मृगापुत्र ने किसका त्याग किया ?

.....

5. किसके लिए श्रमणधर्म का आचरण करना कठिन होता है?

.....

6. करणगुणश्रेणि प्रतिपन्न अणगार किसका क्षय करता है ?

.....

7. दर्शन विशोधि से विशुद्ध जीव उ. कितने भव में मोक्ष चला जाता है ?

.....

8. कौन से ध्यान को ध्याते हुए केवली भगवान मनयोग का सर्वप्रथम निरोध करते हैं।

.....

9. मनसमाधारणता से जीव को किसकी प्राप्ती होती है ?

.....

10. करण सत्य में वर्त्तमान जीव कैसा होता है ?

.....

11. व्यवदान से जीव को क्या प्राप्त होता है ?

.....

12. गोत्र कर्म की उत्कृष्ट स्थिति कितनी है ?

.....

13. ज्ञानावरण के निमित्त से कौन से परिषह होते है ?

.....

14. निर्ग्रन्थ कितने प्रकार के होते है ?

.....

15. क्षमापना से जीव को किस भाव की प्राप्ति होती है ?

.....

16. श्री युगमन्दिर स्वामीजी में 22 परिषह में से कितने परिषहं संभव है ?

.....

17. आत्मप्रदेशों में बंध को प्राप्त होने वाले पुद्गल कितने प्रदेश वाले होते है ?

.....

18. सिद्धअवस्था के प्रथम समय में जीव में कौन-सा उपयोग होता है ?

.....

19. क्या अयोगी जीव पूर्वबद्ध कर्मों की निर्जरा करता है ?

.....

20. किसके संबंध से जीव कर्म पुद्गलों को ग्रहण करता है ?

.....